अकबर की राजपूत नीति

राज कुमार कसेरा

अकबर एक दूरदर्शी शासक था। राजपूतों की शक्ति, वीरता, युद्ध कौशल आदि से परिचित था। उसने तत्कालीन परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार उनसे संबन्ध स्थापित करने की कोशिश की। अतः मुगलों की सुस्पष्ट राजपूत नीति अकबर के काल से प्रारम्भ होता है।

अकबर ने राजपूत शक्ति का प्रयोग अपनी राजनैतिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने, साम्राज्य विस्तार एंव सामाजिक सौहार्द के लिए किया। इसके बदले वह राजपूतों को विशेष राजनैतिक, प्रशासनिक एवं आर्थिक सुविधाएँ भी प्रदान की। अकबर ने राजपूत नीति का विकास शनैः शनैः किया उसकी राजपूत नीति मुगल सम्प्रभुता एवं सर्वोच्चता के दायरे में थी। अकबर की राजपूत नीति का विश्लेषण करते हुए इतिहासकार लिखते है कि"अकबर साम्राज्य के प्रति, राजपूतों से कुछ विशेष कार्यों को साम्राज्य के हित में मुगल सम्राट के विशेषाधिकारों में समाहित करना चाहता था ।

अकबर ने राजपूतों एवं हिन्दुओं को विशेष प्रलोभन एवं सामाजिक–धार्मिक सहुलियते प्रदान की। अकबर 1562 ई0 में 'दास प्रथा' को समाप्त कर दिया। इसने धार्मिक सहिष्णुता का परिचय देते हुए 1563 ई0 में तीर्थयात्रा कर 1564 ई0 में 'जजिया' कर समाप्त कर दिया। इस प्रकार अकबर ने राजपूतों को अपनी ओर मिलाने के लिए सकारात्मक कदम उठाये। उसने वैवाहिक संबन्धों द्वारा भी राजपूतों को अपनी ओर आकर्षित किया।